International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 6, November 2021 |

भारत की "लुक ईस्ट पॉलिसी"

डॉ. हंसा शर्मा

सहायक आचार्य, राजनीति-विज्ञान, बी.एन.डी. राजकीय कला महाविद्यालय, चिमनपुरा, जयपुर, राजस्थान

सार

एक्ट ईस्ट नीति [1] भारत सरकार द्वारा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापक आर्थिक और रणनीतिक संबंध विकसित करने का एक प्रयास है ताकि एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत किया जा सके और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के रणनीतिक प्रभाव का मुकाबला किया जा सके । 1991 में शुरू की गई, भारत सरकार द्वारा पूर्व की ओर देखो नीति ने दुनिया के प्रति भारत के परिप्रेक्ष्य में एक रणनीतिक बदलाव को चिह्नित किया। [2] इसे प्रधान मंत्री नरसिम्हा राव (1991-1996) की सरकार के दौरान विकसित और अधिनियमित किया गया था और अटल बिहारी वाजपेयी (1998-2004) के क्रमिक प्रशासन द्वारा सख्ती से इसका पालन किया गया था।मनमोहन सिंह (2004-2014)।

लुक ईस्ट नीति की सफलता ने भारतीय विदेश मंत्रालय के अधिकारियों को इस नीति को अधिक कार्य-उन्मुख, परियोजना- और परिणाम-आधारित नीति में विकसित करने के लिए उत्साहित किया। [3] कुछ दशकों के बाद, भारत की एक्ट ईस्ट नीति , जिसे 2014 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रशासन द्वारा घोषित किया गया था, लुक ईस्ट नीति का उत्तराधिकारी बन गई। [3] [4] [5] [6] [7] [8]

परिचय

1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद से , चीन और भारत दक्षिण और पूर्वी एशिया में रणनीतिक प्रतिस्पर्धी रहे हैं। [6] [9] चीन ने भारत के पड़ोसी पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ वाणिज्यिक और सैन्य संबंध बनाए हैं और नेपाल और बांग्लादेश में प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्धा की है । [10] 1979 में चीन में डेंग जियाओपिंग के सत्ता में आने और उसके बाद के चीनी आर्थिक सुधार के बाद , चीन ने विस्तारवाद के खतरों को कम करना शुरू कर दिया और बदले में एशियाई देशों के साथ व्यापक व्यापार और आर्थिक संबंध बनाए। चीन सैन्य जुंटा का निकटतम भागीदार और समर्थक बन गयाबर्मा, जिसे 1988 में लोकतंत्र समर्थक गतिविधियों के हिंसक दमन के बाद अंतरराष्ट्रीय समुदाय से बहिष्कृत कर दिया गया था। [11] [12] इसके विपरीत, शीत युद्ध के दौरान , भारत का दक्षिण पूर्व एशिया के कई राज्यों के साथ अपेक्षाकृत झिझक भरा रिश्ता था। ऐसे राजनयिक संबंधों को अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता दी गई। [13]

भारत की "लुक ईस्ट" नीति प्रधानमंत्रियों पीवी नरसिम्हा राव (1991-1996) और अटल बिहारी वाजपेयी (1998-2004) की सरकारों के दौरान विकसित और अधिनियमित की गई थी। [5] आर्थिक उदारीकरण और शीत युद्ध-युग की नीतियों और गतिविधियों से दूर जाने के साथ-साथ, भारत की रणनीति ने करीबी आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध बनाने, रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग बढ़ाने और ऐतिहासिक सांस्कृतिक और वैचारिक संबंधों पर जोर देने पर ध्यान केंद्रित किया है। [5] [6] भारत ने व्यापार, निवेश और औद्योगिक विकास के लिए क्षेत्रीय बाजार बनाने और विस्तार करने की मांग की। [6] इसने चीन के आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव के विस्तार से चिंतित देशों के साथ रणनीतिक और सैन्य सहयोग भी शुरू किया। [4]

क्रियाएँ

पूर्वी एशिया के साथ संबंध

हालाँकि इसने पारंपरिक रूप से कई वर्षों तक बर्मा के लोकतंत्र समर्थक आंदोलन का समर्थन किया था, लेकिन 1993 में भारत की नीति बदल गई, जिससे सैन्य जुंटा के प्रति मैत्रीपूर्ण प्रस्ताव आया। [4] भारत ने व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए और बर्मा में अपना निवेश बढ़ाया; हालाँकि निजी क्षेत्र की गतिविधि कम बनी हुई है, भारत के राज्य निगमों ने औद्योगिक परियोजनाओं और प्रमुख सड़कों और राजमार्गों के निर्माण, पाइपलाइनों और बंदरगाहों के उन्नयन के लिए आकर्षक अनुबंध दिए हैं। [14]भारत ने बर्मा के महत्वपूर्ण तेल और प्राकृतिक गैस भंडार के दोहन, अपनी बढ़ती घरेलू जरूरतों के लिए ऊर्जा का एक प्रमुख और स्थिर स्रोत स्थापित करने, बर्मी संसाधनों पर चीनी एकाधिकार का मुकाबला करने और तेल समृद्ध मध्य पर निर्भरता को कम करने के लिए चीन के साथ अपनी प्रतिस्पर्धा बढ़ा दी है। पूर्वी राष्ट्र. हालाँकि चीन बर्मा का सबसे बड़ा सैन्य आपूर्तिकर्ता बना हुआ है, [4] भारत ने बर्मा के सैन्य कर्मियों को प्रशिक्षित करने की पेशकश की है और पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश हिस्से को प्रभावित करने वाले अलगाववादी आतंकवादियों और भारी मादक पदार्थों की तस्करी को रोकने में उनका सहयोग मांगा है । [14] इस बीच चीन ने राखीन राज्य में ए-1 श्वे क्षेत्र में 2.88-3.56 ट्रिलियन क्यूबिट से अधिक प्राकृतिक गैस के दोहन का अनुबंध जीता है।और बर्मा के तट और कोको द्वीप समूह के साथ नौसैनिक और निगरानी प्रतिष्ठान विकसित किए हैं । इससे भारत में बड़ी चिंता और घबराहट पैदा हो गई है, जिसने बंदरगाह विकास, ऊर्जा, परिवहन और सैन्य क्षेत्रों में अपना निवेश बढ़ा दिया है। [11] [15]

भारत ने फिलीपींस , सिंगापुर , वियतनाम और कंबोडिया के साथ भी मजबूत वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और सैन्य संबंध स्थापित किए हैं । [5] भारत ने श्रीलंका और थाईलैंड के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए और उनके साथ अपना सैन्य सहयोग भी बढ़ाया। इसके पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ कई मुक्त व्यापार समझौते हैं, जिनमें मलेशिया के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता और थाईलैंड के साथ अर्ली हार्वेस्ट स्कीम शामिल है, जबकि यह जापान , दक्षिण कोरिया और के साथ समझौतों पर बातचीत कर रहा है।दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का संगठन (आसियान) सदस्य देश। लोकतंत्र, मानवाधिकारों और रणनीतिक हितों पर समान जोर देने को लेकर ताइवान , जापान और दक्षिण कोरिया के साथ संबंध मजबूत हुए हैं । दक्षिण कोरिया और जापान भारत में विदेशी निवेश के प्रमुख स्रोतों में से एक हैं। [6] [16]

जबकि भारत " एक चीन " नीति का कट्टर समर्थक रहा है और ताइवान पर चीन गणराज्य के अधिकारियों पर मुख्य भूमि पर पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की संप्रभुता को मान्यता दी है , फिर भी भारत ने ताइवान के साथ जुड़ाव बढ़ाने की नीति अपनाई है। भारत ने आतंकवाद-रोधी, मानवीय राहत, समुद्री डकैती-विरोधी, समुद्री और ऊर्जा सुरक्षा, विश्वास-निर्माण और अन्य शक्तियों, विशेष रूप से चीन के प्रभाव को संतुलित करने पर सहयोग की आवश्यकता के कारण पूर्वी एशिया के साथ जुड़ाव बढ़ा दिया है। इस तथ्य से प्रेरित होकर कि भारत का 50% से अधिक व्यापार मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है , भारतीय नौसेना ने पोर्ट ब्लेयर से दूर सुदूर पूर्वी नौसेना कमान की स्थापना की है।अंडमान और निकोबार द्वीप समूह . भारत 1993 से सिंगापुर (SIMBEX) के साथ, 2000 में वियतनाम के साथ संयुक्त नौसैनिक अभ्यास भी कर रहा है और 2002 से अंडमान सागर में इंडोनेशिया के साथ संयुक्त गश्त में लगा हुआ है। जापान और भारत भी सुनामी राहत क्षेत्रीय कोर समूह के सदस्य थे। 2004 में ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ हिंद महासागर। [7]

चीन के साथ संबंध

जबकि भारत और चीन रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी बने हुए हैं, भारत की "पूर्व की ओर देखो" नीति में चीन के साथ महत्वपूर्ण मेलजोल शामिल है। [16] 1993 में, भारत ने चीनी नेताओं के साथ उच्च-स्तरीय वार्ता शुरू की और विश्वास-निर्माण के उपाय स्थापित किए । 2006 में, चीन और भारत ने 1962 के युद्ध के बाद पहली बार सीमा पार व्यापार के लिए नाथू ला दर्रा खोला । [17] 21 नवंबर 2006 को भारतीय प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह और चीनी राष्ट्रपति हू जिंताओ ने संबंधों में सुधार और लंबे समय से चले आ रहे विवादों को हल करने के लिए 10-सूत्रीय संयुक्त घोषणा जारी की। [18]चीन और भारत के बीच व्यापार हर साल 50% बढ़ जाता है, और 2010 के लिए भारतीय और चीनी सरकारों और औद्योगिक नेताओं द्वारा निर्धारित 60 बिलियन डॉलर के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए तैयार है। [19] हालाँकि, पाकिस्तान के साथ चीन के घनिष्ठ संबंध , सिक्किम के भारत के एकीकरण के बारे में संदेह और अरुणाचल प्रदेश पर चीनी दावे ने द्विपक्षीय संबंधों में सुधार को खतरे में डाल दिया है। [20] भारत वर्तमान में राजनीतिक-आध्यात्मिक नेता को शरण दे रहा है, 14वें दलाई लामा भी द्विपक्षीय संबंधों में कुछ घर्षण का कारण बनते हैं। [21]

चीनी राज्य मीडिया टिप्पणीकार भारत की पूर्व की ओर देखो नीति के आलोचक रहे हैं। पीपल्स डेली के संपादकीय में कहा गया है कि लुक ईस्ट नीति शीत युद्ध के दौरान अपने लाभ के लिए सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करने की भारत की कोशिश की "असफलता" से पैदा हुई थी, और ऐसा करने की कोशिश कर रही थी। चीन और जापान के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने से भी ऐसा ही होगा। [22] चीन इंटरनेट सूचना केंद्र के एक स्तंभकार ने पूर्व की ओर देखो नीति की आलोचना करते हुए कहा कि यह गलत "चीन के डर" से उत्पन्न हुई है और "पीएलए की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं की समझ की कमी" को दर्शाती है। [23]

सुपरनैशनल संगठनों में भागीदारी

भारत ने मेकांग-गंगा सहयोग और बिम्सटेक जैसे बहुपक्षीय संगठन विकसित किए हैं , जो पर्यावरण, आर्थिक विकास, सुरक्षा और रणनीतिक मामलों पर व्यापक सहयोग बनाते हैं, जिससे दक्षिण एशिया से परे प्रभाव के विकास की अनुमति मिलती है और पाकिस्तान और चीन की तनावपूर्ण और अवरोधक उपस्थिति के बिना। ने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन में अपने प्रयासों को रोक दिया है । [5] [7] भारत आसियान के साथ एक क्षेत्रीय संवाद भागीदार बन गया1992 में, 1995 में सलाहकार का दर्जा दिया गया, एशिया-प्रशांत में सुरक्षा सहयोग परिषद का सदस्य, 1996 में आसियान क्षेत्रीय मंच का सदस्य और शिखर स्तर का भागीदार (चीन, जापान और कोरिया के बराबर) दिया गया। 2002 में और विश्व कप 2002 में। [7] पहला भारत-आसियान व्यापार शिखर सम्मेलन 2002 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। भारत ने 2003 में आसियान की दक्षिण पूर्व एशिया में मित्रता और सहयोग की संधि को भी स्वीकार कर लिया । [7]

कई मामलों में, इन मंचों पर भारत की सदस्यता क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के प्रयासों का परिणाम रही है। विशेष रूप से, जापान ने आसियान+3 प्रक्रिया को कमजोर करने के लिए भारत को आसियान+6 में लाया, जहां चीन का दबदबा है, जबकि सिंगापुर और इंडोनेशिया ने भारत को पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान ने एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) में भारत की सदस्यता के लिए भी पैरवी की है। कई बुनियादी ढांचा परियोजनाएं भी भारत को पूर्वी एशिया के करीब बांधने का काम करती हैं। भारत एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग और एशियाई राजमार्ग नेटवर्क और ट्रांस-एशियाई रेलवे के लिए प्रशांत पहल में भाग

ले रहा है।नेटवर्क। भारत के असम राज्य को म्यांमार के माध्यम से चीन के युन्नान प्रांत से जोड़ने वाली द्वितीय विश्व युद्ध - युग की स्टिलवेल रोड को फिर से खोलने पर भी चर्चा चल रही है । [7]

कनेक्टिविटी परियोजनाएँ

कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट , भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग आदि जैसी सड़क और व्यापार कनेक्टिविटी परियोजनाएं पूर्व की ओर देखो नीति के तहत शुरू की गई हैं। फिलहाल ये प्रोजेक्ट चल रहे हैं.

विचार-विमर्श

मूल्यांकन

भारतीय विदेश नीति के विद्वान रेजाउल करीम लस्कर के अनुसार, 'लुक ईस्ट' नीति ने दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया है और यह सुनिश्चित किया है कि भारत उभरती अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाए । और क्षेत्र की सुरक्षा वास्तुकला। [24] दक्षिण और पूर्वी एशियाई देशों के साथ वाणिज्य भारत के विदेशी व्यापार का लगभग 45% है। [6] हालांकि इसके प्रयासों को काफी सफलता मिली है, लेकिन क्षेत्र के देशों के साथ व्यापार और आर्थिक संबंधों के मामले में भारत चीन से पीछे है। [8]

मोदी प्रशासन के तहत एक्ट ईस्ट नीति

हनोई की अपनी यात्रा में , सुषमा स्वराज ने एक एक्ट ईस्ट नीति की आवश्यकता पर बल दिया, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि भारत को अधिक सक्रिय क्षेत्रीय स्थिति में लाने के लिए भारत की दो दशक से अधिक पुरानी लुक ईस्ट नीति का स्थान लेना चाहिए। [25] [26] मोदी प्रशासन ने कहा कि भारत की 1991 की पूर्व की ओर देखो नीति के अनुसार भारत आसियान और अन्य पूर्वी एशियाई देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगा, जो पूर्वी पड़ोसियों के साथ आर्थिक जुड़ाव में सुधार पर केंद्रित है। [27]यह नीति सामान्य रूप से उस क्षेत्र के देशों और विशेष रूप से वियतनाम और जापान के साथ रणनीतिक साझेदारी और सुरक्षा सहयोग बनाने का एक उपकरण बन गई। जबकि पूर्व की ओर देखो नीति का उद्देश्य सोवियत संघ से परे सहयोगी बनाना था, इसने म्यांमार और बांग्लादेश जैसे छोटे सीमावर्ती देशों के साथ गठबंधन की अनदेखी की। [28] [29] चीन ने इस निरीक्षण का लाभ उठाया, म्यांमार और बांग्लादेश के साथ व्यापार दरों को भारत की तुलना में कहीं अधिक बढ़ा दिया। [29]

एक्ट ईस्ट पॉलिसी ने बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शुरू कीं, जैसे अगरतला-अखौरा रेल परियोजना (उत्तर पूर्वी भारत और बांग्लादेश को जोड़ने वाला पहला रेलमार्ग) और एशियाई त्रिपक्षीय राजमार्ग (म्यांमार के माध्यम से मोरेह, भारत को थाईलैंड से जोड़ने वाला एक नया राजमार्ग)। [29] [30] इन लुक ईस्ट नीति परिवर्तनों ने दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर दोनों में चीनी प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए फिलीपींस, मलेशिया और वियतनाम के साथ रणनीतिक साझेदारी में सुधार किया। [29] नेट पर, एक्ट ईस्ट पॉलिसी भारत की पिछली गुटनिरपेक्षता और समान दूरी की स्थिति से एक प्रस्थान है, और बुनियादी ढांचे-आधारित "सॉफ्ट पावर" की ओर एक कदम है। [28] [30]

- नवंबर 2014 में घोषित 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी', 'लुक ईस्ट पॉलिसी' का ही उन्नत रूप है।
- यह विभिन्न स्तरों पर विशाल एशिया-प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने हेतु एक राजनयिक पहल है।
- इस पॉलिसी के तहत द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय स्तरों पर कनेक्टिविटी, व्यापार, संस्कृति, रक्षा और लोगों-से-लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ गहन और निरंतर संपर्क को बढ़ावा दिया जाता है।

लक्ष्य:

- आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देना तथा एक सक्रिय व व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाकर भारत-प्रशांत क्षेत्र में स्थित देशों के साथ रणनीतिक संबंध विकसित कर उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के आर्थिक विकास में सुधार करना जो कि दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार है।

लुक ईस्ट पॉलिसी:

- रणनीतिक साझेदार सोवियत संघ के विघटन (शीत युद्ध, 1991 के अंत में) के प्रभाव से उबरने के लिये भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया में अमेरिका के सहयोगी देशों के साथ संबंधों को मज़बूत करने का प्रयास किया।

- इन प्रयासों में वर्ष 1992 में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने लुक ईस्ट पॉलिसी की शुरुआत की ताकि दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के साथ भारत के संबंधों को रणनीतिक रूप दिया जा सके और एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' के रणनीतिक प्रभाव को प्रतिसंतुलित किया जा सके।[1,2,3]

लुक ईस्ट पॉलिसी एवं एक्ट ईस्ट पॉलिसी में अंतर:

- लुक ईस्ट पॉलिसी:
  - लुक ईस्ट पॉलिसी में 'दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संघ' (आसियान) तथा उनके आर्थिक एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया।
    - भारत वर्ष 1996 में आसियान का एक संवाद भागीदार और वर्ष 2002 में शिखर स्तरीय वार्ताओं का भागीदार बना।
    - वर्ष 2012 में यह संबंध रणनीतिक साझेदारी में बदल गया।
    - वर्ष 1992 में जब भारत ने लुक ईस्ट पॉलिसी शुरू की, उस समय आसियान के साथ भारत का व्यापार 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। वर्ष 2010 में आसियान के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद व्यापार बढ़कर 72 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2017-18) हो गया है।
    - भारत 'पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन' (EAS), 'आसियान क्षेत्रीय मंच' (ARF) आदि जैसे कई क्षेत्रीय मंचों में भी सक्रिय भागीदार है।
- एक्ट ईस्ट पॉलिसी:
  - 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी आसियान देशों के आर्थिक एकीकरण तथा पूर्वी एशियाई देशों के साथ सुरक्षा सहयोग पर केंद्रित है।
    - भारत के प्रधानमंत्री ने 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के तहत 4C पर प्रकाश डाला है।
      - संस्कृति (Culture)
      - वाणिज्य (Commerce)
      - कनेक्टिविटी (Connectivity)
      - क्षमता निर्माण (Capacity Building)[7,8,9]
  - सुरक्षा भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।
    - दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर में बढ़ते चीनी हस्तक्षेप के संदर्भ में भारत द्वारा नौपरिवहन की स्वतंत्रता हासिल करना और हिंद महासागर में अपनी भूमिका स्पष्ट करना 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी की एक प्रमुख विशेषता है।
    - भारत 'क्वाड' नामक भारत-प्रशांत क्षेत्र आधारित अनौपचारिक समूह के माध्यम से भी ऐसे प्रयास कर रहा है।

कनेक्टिविटी बढ़ाने की पहल:

- भारत और बांग्लादेश के बीच अगरतला-अखौरा रेल लिंक।
- इंटर-मॉडल परिवहन संपर्क और बांग्लादेश के माध्यम से अंतर्देशीय जलमार्ग।
- कलादान मल्टीमॉडल ट्रांज़िट ट्रांसपोर्ट परियोजना एवं म्याँमार और थाईलैंड के साथ नॉर्थ ईस्ट को जोड़ने वाली त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना।
- 'भारत-जापान एक्ट ईस्ट फोरम' के तहत विभिन्न सड़क एवं पुल परियोजनाओं तथा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर प्रोजेक्ट के आधुनिकीकरण का काम किया गया है।

- 'भारत-जापान एक्ट ईस्ट फोरम' वर्ष 2017 में स्थापित किया गया था जिसका उद्देश्य भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और जापान की "फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक रणनीति" के तहत भारत-जापान सहयोग हेतु एक मंच प्रदान करना है।
- यह फोरम भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र के आर्थिक आधुनिकीकरण के लिये विशिष्ट परियोजनाओं की पहचान करेगा, जिनमें कनेक्टिविटी, विकास संबंधी बुनियादी ढाँचे, औद्योगिक संपर्क और पर्यटन, संस्कृति एवं खेल संबंधी गतिविधियों के माध्यम से लोगों के बीच संपर्क जैसे कारक शामिल हैं।

अन्य पहलें:

- महामारी के दौरान आसियान देशों को दवा/चिकित्सा आपूर्ति के रूप में विस्तारित सहायता।
- आसियान देशों के प्रतिभागियों के लिये IIT में 1000 पीएचडी फेलोशिप की पेशकश के साथ छात्रवृत्ति प्रदान की गई है।
- भारत शिक्षा, जल संसाधन, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में ज़मीनी स्तर के समुदायों के विकास में सहायता प्रदान करने के लिये कंबोडिया, लाओस, म्याँमार और वियतनाम में त्वरित प्रभाव परियोजनाओं को लागू कर रहा है।
  - 'क्विक इम्पैक्ट प्रोजेक्ट्स' (QIPs) कम लागत वाली छोटे पैमाने की परियोजनाएँ हैं, जिन्हें कम समय-सीमा के भीतर योजनाबद्ध और कार्यान्वित किया जाता है।[10,11,12]

परिणाम

भारत की दक्षिण एशियाई नीति तथा प्रमुख शक्तियों के प्रति अपनाई गई नीति के अपवाद को छोड़कर 'एक्ट ईस्ट' नीति (एआईपी) संभवत: राष्ट्र की समग्र विदेश नीति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतिनिधित्व करती है। इसे भारत के बाह्य देशों के साथ संबंधों की प्रमुख विशेषता के रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसमें पारस्परिक संपर्कों के समस्त पहलुओं को शामिल किया गया है जैसे रणनीतिक, राजनीतिक सुरक्षा, भारत के पूर्व में स्थित देशों के साथ सामाजिक-आर्थिक संबंधों में सुधार करना जिनमें आसियान देशों के माध्यम से म्यांमार से लेकर चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, आस्ट्रेलिया, प्रशांत द्वीप के राष्ट्र और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं। इस नीति के प्रभाव तथा सफलता उस परिमाण का निर्धारण करेगी जिस तक भारत एशिया के निर्णायक क्षेत्र में सुरक्षा और विकास के दो प्रयासों को सहायता प्रदान करते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करने और उन्हें प्रवर्तित करने में सफल रहा है।

भारत प्रशांत अथवा एशिया-प्रशांत अथवा पूर्व एशियाई क्षेत्र में पर्याप्त हित विद्यमान है। स्थिति जटिल है तथा भ्रामक हैं। भविष्य के विकास को मुख्य हितधारकों जैसे यूएस, चीन, भारत, जापान, आसियान और अन्य की अर्थव्यवस्था, राजनीति, रक्षा और राजनयिकता के संश्लिष्ट पारस्परिक कार्यों के माध्मय से मूर्त रूप प्रदान किया जाएगा। अत: जब हम पूर्व के प्रति भारत की नीति के मार्ग और उसके प्रभाव की समीक्षा करेंगे, तो हमें वृहद् क्षेत्रीय और वैश्विक संदर्भ को ध्यान में रखना होगा।

यह तथ्य कि पिछले 22 महीनों में भारत के शीर्षस्थ पदाधिकारियों - राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने आसियान के दस सदस्य राष्ट्रों में से नौ की यात्रा की और यह कि प्रधानमंत्री ने इनके अलावा चीन, जापान, आस्ट्रेलया, दक्षिण कोरिया, मंगोलिया और फिजी की भी यात्रा की और यह कि इस क्षेत्र से उच्च स्तरीय पदाधिकारियों के भारत दौरे की भी एक लंबी श्रृंखला जारी रही, इस क्षेत्र और चर्चाधीन हमारी नीति के निरंतर बढ़ते महत्व का एक स्पष्ट संकेत है।

नीति : उद्भव और उत्पत्ति

जनता की स्मरण-शक्ति संभवत: अल्प होती है परंतु विद्वान भूलने की गलती नहीं कर सकते हैं। वे सदैव इतिहास के विषय में सतर्क रहते हैं तथा उससे उपयुक्त सबक हासिल करने के लिए तैयार रहते हैं। अत: प्रो. एस.डी. मुनि यह तर्क देते हुए उचित प्रतीत होते हैं कि नीति की "एक सुदृढ़ ऐतिहासिक विरासत होती है तथा उसका उल्लेख करते हुए ‘‘.....लुक ईस्ट नीति 1991 के बाद से कोई भी परिणाम हासिल नहीं कर सकी’’ यहां पर दो बिंदु उल्लेखनीय हैं। पहला, भारत के पूर्वी देशों के साथ व्यापक आदान-प्रदान तथा संबंधों को 'चार लहरों' के रूप में देखा जाना चाहिए - उपनिवेशवाद-पूर्व, उपनिवेशवाद, स्वतंत्रता-उपरांत और 1990 से अब तक, जैसा कि इस प्रतिष्ठित विद्वान द्वारा परामर्श दिया गया है। दूसरे, प्रधान मंत्री नरसिंह राव की ‘लुक ईस्ट नीति’ (एलईपी) की उत्पत्ति को उनके पूर्व के प्रधानमंत्री राजीव गांधी की राजनयिक पहलों में पाया जा सकता है जिसे अस्सी के दशक में आरंभ किया गया था। फिर भी, यहां इस बात को मान्यता देना भी आवश्यक है कि नब्बे के दशक के प्रारंभ में भारत (और इसके पूर्वोत्तर में आसियान और वृहद क्षेत्र) में विशिष्ट कारकों का अभ्युदय हुआ जिसके परिणामस्वरूप एलईपी का जन्म और विकास हुआ।[13,15,17]

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवम्बर, 2014 में नेपिताव में भारत-आसियान शिखर-सम्मेलन में एलईपी का एईपी के रूप में रूपांतरण किए जाने का विशेष रूप से उल्लेख किया। इससे पूर्व, 'एक्ट ईस्ट नीति' पदबंध का प्रयोग विदेशी मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा किया

गया था। विश्लेषकों ने भी अप्रत्यक्ष रूप से एलईपी की आलोचना करते हुए इस तथ्य का उल्लेख किया। यूएस सेक्रेटरी ऑफ स्टेट्स हिलेरी क्लिंटन ने भी भारत को न केवल 'पूर्व की ओर देखने' (लुक ईस्ट) भर की बल्कि 'पूर्व के संबंध में कार्रवाई के संबंध में कार्रवाई करने (एक्ट ईस्ट)' की सलाह दी थी।

इस संदर्भ में, मैं अपने प्रतिष्ठित श्रोताओं को इस विषय पर दो मूल्यवान पुस्तकों का अवलोकन करने की अनुशंसा करूंगा जिनका संपादन राजदूत ए.एन.राम द्वारा किया गया है तथा जो भारतीय विश्व मामले परिषद (आईसीडब्ल्यूए) की पहल पर प्रकाशित की गई हैं। ये पुस्तकें हैं - 'टू डिवेड्स ऑफ इंडियाज लुक ईस्ट पॉलिसी' तथा 'इंडियाज़ एशिया - पैसिफिक एंगेजमेंट। यहां पर एक कम ज्ञात तथ्य का उल्लेख करना भी प्रारंसिक होगा। 'एईपी' का व्यापक प्रयोग आरंभ किए जाने से पूर्व मलेशिया के पूर्व उच्चायुक्त परमजीत एस. सहाय ने लिखा था (ऊपर उल्लेख की गई दूसरी पुस्तक में) :

भारत को अपनी एलईपी एक नया बल प्रदान करना चाहिए। मैं इसे 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' कहना चाहूंगा जबकि आसियान के मेरे कुछ मित्र इसे 'गो ईस्ट पॉलिसी' कहना पसंद करेंगे।[18,19,20]

अंतर को परिभाषित करें :

मोदी सरकार की 'एक्ट ईस्ट नीति' के आलोचक यह सुझाव देते हैं कि इस नीति तथा एलईपी के बीच बहुत ही कम अंतर है। अन्य आलोचक एईपी की शिष्टता और मौलिकता पर बल देते हैं। इस मामले में तथ्य यह है कि एईपी एलईपी का अत्यंत सतर्कता के साथ तैयार किया गया उन्नयन है, जो क्षेत्र में बदलती हुई परिस्थितियों और साथ ही अपनी आर्थिक और सुरक्षा कार्यनीतियों में भारत की प्राथमिकताओं के विकास के प्रति एक असंशोधित प्रतिक्रिया है।

जैसा कि मैंने पूर्व में तर्क दिया है, एलईपी तथा एईपी की सतर्कतापूर्ण की गई तुलना यह दर्शाती है कि पूर्व नीति के नए संस्करण में पांच उल्लेखनीय विशेषताएं हैं।

प्रथमत: मूत कार्यों तथा ठोस परिणामों का ध्यान केन्द्रण 'लुक' से 'एक्ट' में परिवर्तन के फलस्वरूप नैसर्गिक रूप से प्रतिबिंबित होता है। दूसरे, जबकि आसियान देश इस नीति के केन्द्रीय स्तंभ अथवा केन्द्र हैं, साउथ ब्लॉक चीन के अधिकारिता में होने वाली उल्लेखनीय वृद्धि का सामना करने के लिए विशेष रूप से यूएस, जापान, आस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया से मिलकर बने इस विस्तारित क्षेत्र के साथ सहयोगों को गहन करने में अत्यधिक निवेश (पूर्व की तुलना में) कर रहा है। इसके फलस्वरूप, तीसरी विशेषता सुरक्षा, रक्षा और रणनीतिक क्षेत्र में भारत की ओर से दिखाई गई निर्भीकता है।[21,22,23]

चौथे, भारत आसियान के साथ अधिक सौहार्दपूर्ण और सहयोगपूर्ण संबंध स्थापित कर सकता है जो सुदृढ़ भी होंगे। पहले शिखर-सम्मेलन में ही, भारतीय प्रधानमंत्री ने 'हमारे मुक्त-व्यापार करार की समीक्षा' संचालित करने की मांग की। क्षेत्रीय व्यापार आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) के लिए वार्तालाप करने पर भी अत्यधिक बल प्रदान किया जा रहा है जिसका उद्देश्य उसे 2016 में समाप्त कर देना है। इसके अतिरिक्त, वाणिज्य, संस्कृति और संयोजनता के लिए एक त्रिआयामी संगठन' का सृजन करने के लिए उच्च समर्पण प्रदान करने का वायदा भी किया गया। अंतत- नई सरकार ने यह स्पष्ट संकेत दिया कि भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र एईपी के क्रियान्यन में उच्च प्राथमिकता प्राप्त करेगा।

क्रियान्वयन की स्थिति 2016

नीति के दो अवयवों अर्थात आसियान तथा विस्तारित क्षेत्र में से हम पहले आसियान पर चर्चा करेंगे।

आसियान

भारत-आसियान वार्तालाप भागीदारी 1992 में तथा शिखर सम्मेलन भागीदारी, 2002 में आरंभ हुई। अत- 2017 में, दोनों ही पक्ष वार्तालाप की रजत जयंती तथा शिखर सम्मेलन की 15वीं वर्षगांठ मनाएंगे। एक वर्ष पूर्व, 2016 के प्रारंभ में, रणनीतिक भागीदारी एक बेहतर स्थिति में है हालांकि इसकी पूर्व क्षमता अभी हासिल की जानी है। यह बात निम्नलिखित से स्पष्ट होती है:

1. भारत ने दिसम्बर, 2015 में आसियान समुदाय के सृजन का स्वागत किया है तथा उसका समर्थन किया है (हालांकि इसका कार्य अभी प्रगति पर है)। आसियान ने मोदी सरकार की घरेलू और विदेश स्तरों पर आरंभ की गई नई नीतिगत घरेलू और विदेश स्तरों पर आरंभ की गई नई नीतिगत पहलों की पर्याप्त प्रशंसा की है। नई दिल्ली स्थित नेतृत्व भारत और आसियान को 'विद्यमान आर्थिक अनिश्चितताओं के मध्य सकारात्मक के दो चमकदार बिंदुओं' के रूप में देखता है।

2. दो शिखर-सम्मेलनों (2014 और 2015 में) ने पर्याप्त परिणाम प्रदर्शित किए। तीन वार्षिक वार्ता तंत्र विद्यमान है। अनेक परियोजनाओं को वित्त-पोषित करने के लिए तीन निधियां अर्थात् आसियान भारत सहयोग निधि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी निधि तथा

हरित निधि संचालित की जा रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी निधि को 1 मिलियन डॉलर से बढ़ाकर 5 मिलियन डॉलर कर दिया गया है। 2016-20 के लिए कार्य-योजना अगस्त, 2015 में अंगीकृत की गई है। सहयोग के अंतर्गत अनेक क्षेत्र शामिल है, जैसे व्यापार और निवेश, खाद्य, कृषि, पर्यटन और आईसीटी आदि।[25,27,28]

3. कुछ अन्य राष्ट्रों के विपरीत, भारत पूर्व एशियाई मामलों में आसियान की केंद्रीयता के सिद्धांत का पालन करता है। यह आशा की जाती है कि आसियान अपनी एकता, अखण्डता और एकीकरण की आवश्यकता का समझेगा क्योंकि जिस सिद्धांतवादी आधार पर यह केन्द्रीयता आधारित है, वह स्पष्टता परस्पर निर्भर है।

4. भारत सुरक्षा, जिसमें सामुद्रिक सुरक्षा भी शामिल है (पारंपरिक और गैर-पारंपरिक, दोनों ही प्रकार की) के मुद्दे को पूरी गंभीरता के साथ उठा रहा है। दक्षिणी चीन सागर में विद्यमान स्थिति पर इसके विचारों को स्पष्टता और निरंतरता के साथ प्रतिपादित किया जाता है। इसका सत्व 'नियंत्रण', 'उत्तरदायित्व' की मांग करता है, अंतर्राष्ट्रीय विधियों और सन्नियमों का पालन करने, नौवहन की स्वतंत्रता बनाए रखने, समुद्री मार्गों की सुरक्षा करने और सबसे ऊपर ताकत के भय अथवा प्रयोग को निवारित करने की अपेक्षा करता है। आसियान के पास आबद्धकारी आचार संहिता (सीओसी) को शीघ्र तैयार करने, आचार संहिता पर पूर्ण घोषणा (डीओसी) को क्रियान्वित करने के लिए वार्तालाप शीघ्र पूर्ण किए जाने के निरंतर समर्थन से आश्वस्त होने के कारण विद्यमान हैं।

5. भारत एशिया-प्रशांत में सुरक्षा और सहयोग के लिए एक अंतर्वेशी संतुलित, पारदर्शी और मुक्त क्षेत्रीय वास्तुशिल्प की हिमायत करता है। आसियान-भारत परामर्श और सहयोग आसियान के नेतृत्व वाले विभिन्न मंचों के माध्यम से गहन होता जा रहा है जिनमें पूर्व एशिया शिखर-सम्मेलन, आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक और विस्तारित आसियान सामुद्रिक फोरम शामिल हैं।

6. मोदी सरकार ने दो नए पहलकदम उठाए हैं (क) सीएलएमवी देशों में विनिर्माण हब विकसित करने के लिए 500 करोड़ रुपए (लगभग 75 मिलियन डॉलर) की पर्याप्त निधि के साथ परियोजना विकास निधि, और (ख) ऐसी परियोजनाओं को सहायता देने के लिए 1 बिलियन डॉलर का नया लाइन ऑफ क्रेडिट, जो भारत और आसियान के बीच भौतिक और डिजिटल संयोजनता को समर्थित करती है।[29,30]

उपराष्ट्रपपति हामिद अंसारी ने 4 फरवरी, 2016 को छुलालौंगकोम विश्वविद्यालय में संबोधन करते हुए उल्लेख किया : "एक सुदृढ़ आसियान-भारत कार्यनीतिक भागीदारी के लिए तर्काधार पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट है। अत: यह 'स्वाभाविक' है कि दोनों पक्षकार गुणवत्तापूर्ण, अधिक सारवान तथा मजबूत संबंधों की दिशा में कार्य करें।''

विस्तारित क्षेत्र

गैर-आसियान क्षेत्रों में शामिल करने वाले विस्तारित क्षेत्र के संबंध में, विद्यमान दशक के दौरान मुख्य विकास में प्रतिबिंति मुख्य रूझानों को सर्वप्रथम केन्द्रित करना अधिक उपयोगी रहेगा। चीन तथा दक्षिणी चीन सागर और पूर्वी चीन सागर में स्थित कुछ देशों के बीच सीमा संबंधी विवाद, हथियारों का निर्माण, दो उभरते हुए आर्थिक समूहों, टीपीपी और आरसीईपी के बीच अवाक् प्रतिस्पर्धा, नए क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुशिल्प तथा सुरक्षा के लिए गैर-पारपंरिक जोखिमों को नियंत्रित करने के लिए सहयोग पर वाद-विवाद और 'वन बेल्ट, वन रोड (ओबीओआर)' और 'सामुद्रिक सिल्क रूट' (एमएसआर) पहलों के प्रति चीन का अभियान ये सभी मुद्दे एक साथ मिकर वर्तमान चिंताओं और प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। जैसा कि विद्वान-राजनयिक ए.एन. राम ने उचित ही कहा है - 'स्पष्टत: प्रशांत क्षेत्र सारहीन शीत युद्धोपरांत राजनीतिक संतुलन, रणनीतिक संतुलन, सैन्य और सामुद्रिक अवस्थिति तथा आर्थिक विस्तार और प्रतिस्पर्धा के पुनर्विन्यास के दौर से गुजर रहा है .....।"

इन समस्त प्रवृत्तियों को अपने सत्व में रखते हुए संयुक्त राज्य, प्रधान शक्ति और चीन, अभरती शक्ति के मध्य रणनीति प्रतिस्पर्धा एशिया प्रशांत क्षेत्र में उनकी भूमिकाओं को पुन:व्यवस्थित करने की होड़ लगी हुई है। विद्वान अतीत में स्पार्टा और एथेंस, ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी, सोवियत संघ और संयुक्त राज्य के बीच इसी प्रकार के विवादों का स्मरण करते हुए यह चेतावनी देते हैं कि वर्तमान यूएस-चीन प्रतिद्वंद्विता को परिभाषित करने के लिए एक विशुद्ध द्विआधारी दृष्टिकोण तैयार किया जाना चाहिए। दोनों राष्ट्रो की गहन पारस्परिक आर्थिक निर्भता तथा साथ ही क्षेत्रीय राष्ट्रों की चीन के आर्थिक उन्नयन से लाभ उठाना जारी रखने की प्रत्यक्ष आकांक्षा, भले ही ऐसे करने से उन्हें रणनीतिक असहजता और अनावश्यक चिंताएं हो रही हैं, को ध्यान में रखते हुए वे इसकी असामान्य संश्लिष्टता की ओर इशारा करते हैं। विद्यमान अनिश्चितताओं के फलस्वरूप विशेषज्ञ यह तर्क देते हैं कि क्षेत्र को विविधकारी परिणामों, प्रतिस्पर्धा में तेजी, सहयोग के विस्तार तथा विरोध और विवाद की संभावना के लिए स्वयं को तैयार करना होगा।

इस परिप्रेक्ष्य में, मोदी सरकार ऐसी नीति का अनुसरण कर रही है जो भारत की आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक अनिवार्यताओं का मिश्रण है। इसमें मुख्य रूप से आर्थिक विकास में तेजी लाने, आसियान और इसके परे संयोजनता बढ़ाने तथा सामुद्रिक सुरक्षा सुनिश्चित करने का मिश्रण है। इसके साथ-साथ, रणनीतिक मुद्दों पर असंशोधित निर्भीकता का प्रमाण भी विद्यमान है। यह यूएस, जापान, आस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया के साथ कार्यनीतिक भागीदारियों को सुदृढ़ीकरण के एक नए स्तर तक ले जाते हुए चीन के

साथ संबंधों में सुधार लाने के प्रयासों में प्रतिबिंबित होता है, जैसा कि पिछले दो वर्षों में हस्ताक्षरित किए गए नए करारों तथा अनेक अन्य कार्यों से स्पष्ट है।

भारत की रक्षा क्षमताओं को सुदृढ़ बनाने के लिए तैयार की गई नीतियों का अनुपालन पूरी शक्ति के साथ किया जाएगा परंतु आधारभूत फॉल्ट लाइनों को अनुरक्षित किया जाएगा। यह बात आर्थिक विकास पर ध्यान केन्द्रित करने तथा तनावों और विवादों को दूर करने के लिए क्षेत्र को नई दिल्ली द्वारा किए गए आह्वान से वर्णित होती है। इस नीति का एक उल्लेखनीय अवयव सुदृढ़ और अधिक प्रभावी बनने के लिए दक्षिण एशिया शिखर-सम्मेलन (ईएस) को सहायता प्रदान करना है।

म्यांमार की भूमिका

आसियान देशों के मध्य, म्यांमार का भारत के लिए एक विशेष स्थान है। यह न केवल आसियान का सदस्य राष्ट्र है, अपितु इसकी भारत के साथ स्थल और सामुद्रित सीमाएं भी हैं। यह भारत के अन्य भागों के लिए एक अजनबी हो सकता है, परंतु पश्चिम बंगाल के लिए नहीं। यह वो स्थान है जहां म्यांमार/बर्मा ने अध्ययन किया, शोध कार्य किया तथा एक लंबे समय से विद्वानों की पीढ़ियों के माध्यम से उसकी निगरानी की गई।

जैसाकि मैंने अपनी पुस्तक 'भारत-म्यांमार संबंध : बदलते आयाम' में तर्क दिया है, म्यांमार और भारत एक-दूसरे के लिए महत्वपूर्ण हैं। म्यांमार के लिए भारत का महत्व नृजातीयता और धर्म के संदर्भ में वर्णित किया जा सकता है। बर्मा के समुदाय के लिए बौद्धधर्म के संबंध दोनों देशों के बीच सर्वाधिक आकर्षक और घनिष्ठ संबंध है। इसके अलावा, दोनों ही भू-भागों के मध्य दर्शन, आध्यात्म, संस्कृति और वाणिज्य पर पारस्परिक संपर्क और विचार-विनियम की सामूहिक स्मृतियां आज भी विद्यमान है। भारत के लिए, म्यांमार अत्यधिक महत्व का राष्ट्र है क्योंकि यह एक ऐसा भागीदार है जो 'चीन कारक' के संदर्भ में एक कार्यनीतिक 'बफर स्टेट' के रूप में हमारे उत्तर-पूर्व की सुरक्षा और विकास के लिए, हमारे एईपी के लिए एक मुख्य क्षेत्र के रूप में, एक आकर्षक बाजार के रूप में तथा एक आर्थिक भागीदार के रूप में हमें सहयोग देने के लिए सक्षम है।

म्यांमार के न्यू लाइट ने दिनांक 30 मई, 2012 के अपने संपादकीय में उचित टिप्पणी की है कि "वस्तुत: भारत को म्यामांर की आवश्यकता है तथा म्यांमार को भी भारत की आवश्यकता है, और यही एक साझा आधार है।"

म्यांमार में 2010 के बाद से सैन्य शासन से लोकतंत्र की ओर परिवर्तन का दौर रहा है। पिछले पांच वर्षों में उसकी आंतरिक और बाह्य स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं। 8 नवम्बर, 2015 को हुए संसदीय चुनावों ने वहां पर एक नए युग की शुरुआत हुई। लोकतंत्र की यह परंपरा और भी मजबूत होगी परंतु सत्ता का हस्तांतरण भविष्य में राष्ट्र द्वारा किए जाने वाले कार्यों का मार्गदर्शन करेगा। म्यांमार एक ऐसी कार की भांति प्रतीत होता है जिसे दो ड्राइवर चला रहे हैं ' एनएलडी नेता आंग सेन सू की और कमांडर इन चीफ मिन आंगी-इलेंग। यदि दोनों नेता परस्पर एक-दूसरे के साथ सहयोग करें, तो यह देश आगे बढ़ेगा। यदि वे ऐसा करने में असफल रहते हैं, तो आगे परेशानियां खड़ी हो सकती हैं।

इस विषम स्थिति को ध्यान में रखते हुए, भारत में कुछ लोग 'प्रतीक्षा करो और स्थिति पर नज़र रखो' नीति की सलाह देते हैं। मैं इससे सहमत नहीं हूं। हमारा म्यांमार में एक बड़ा हित निहित है। निष्क्रियता के स्थान पर सक्रियता, जो अंशशोधक और उद्देश्यपूर्ण हो, द्वारा हमारी नीति का मार्गदर्शन किया जाना चाहिए। हमें शक्ति के दोनों ही केन्द्रों के साथ घनिष्ठताऔर अति-सक्रियता के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। भारत अपने निजी हित में एक स्थायी, मजबूत अंतर्वेशी और लोकतांत्रिक म्यांमार का स्वागत करेगा। भारत के लिए सही समय है कि वह एक दीर्घकालिक और प्रबुद्ध संदर्श को अपनाते हुए एक मित्र और महत्वपूर्ण पड़ोसी देश के प्रति अपने ध्यान और सहयोग में वृद्धि करे। म्यांमार में सफलता हमारे एईपी की सफलता में योगदान करेगी।[30]

निष्कर्ष

जब मोदी सरकार 2016 में अपने पांच वर्ष के कार्यकाल के आधे मार्ग तक पहुंचेगी तो हम एईपी के परिणामों पर निर्णय लेने की सही स्थिति में होंगे। लेखक द्वारा किसी अन्य स्थान पर उल्लेख किए गए तथा नीचे वर्णित पांच-सूत्रीय मानदण्ड इस मूल्यांकन के प्रयोजन के लिए उपयोगी होंगे।

(i) भारत और आसियान के बीच व्यापार (2014-15 में 77 बिलियन डॉलर) और निवेश (2014-15 के दौरान 71 बिलियन डॉलर) में वृद्धि किए जाने की आवश्यकता है। इसके बिना एईपी भविष्य में शानदान सफलता का दावा करने में असमर्थ रहेगी।

(ii) एक लंबे समय पूर्व आरंभ की गई भारत-आसियान परियोजनाओं को अति-शीघ्र पूरा किए जाने की आवश्यकता है। म्यांमार में कालधन मल्टी-मॉडल परिवहन परियोजना तथा त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना (भारत, म्यांमार और थाइलैंड को जोड़ने वाली) को पूरा किए जाने के लिए लक्ष्य क्रमश: 2019 और 2018 है। नई दिल्ली को इस संबंध में किसी अन्य विलंब को रोकने के लिए हर संभव

प्रयास करने होंगे। ऊपर उल्लेख की गई दो नई पहलों - सीएलएमवी और आसियान के लिए - को भी यथासंभव क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

(iii) इस बात पर विचार करते हुए कि ट्रांस पैसेफिक पार्टनरशिप (टीपीपी) लाभ देने की स्थिति की ओर बढ़ रही है, आरसीईपी संधि के लिए बातचीत करने वाले पक्षकार (अर्थात् आसियान, भारत और अन्य) इसे अंतिम रूप देने और इस पर हस्ताक्षर करने में अब और विलंब करने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं। सबका साझा उद्देश्य इस कार्य को 2016 के अंत तक पूरा करने का है। क्या इस लक्ष्य की प्राप्ति हो पाएगी।

(iv) दक्षिणी चीन सागर से संबंधित स्थिति के बारे में चिंतित देश चीन को यह समझाने में सफल रहे हैं कि वह स्थिति को और गंभीर न बनाए। सैन्य विवाद अथवा दुर्घटनाओं को रोकना होगा, भले ही राजनीतिक तनाव और हथियारों की होड़ जारी भी रहे। इस पर कड़ी नज़र रखे जाने की आवश्यकता है।

(v) अंतत: दक्षिण एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) का नीतिगत सहयोग के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में उन्नयन करना एक अन्य देखने योग्य पहलू होगा।[29,30]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. बाजपेयी, चिएतिगज (4 मई 2020)। "नवीनीकृत सत्ता राजनीति के युग में भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति को पुनर्जीवित करना" । प्रशांत समीक्षा । 36 (3): 631-661. डीओआई : 10.1080/09512748.2020.2110609 । आईएसएसएन 0951-2748 . एस2सीआईडी 251546937 ।
2. ^ थोंगखोलाल हाओकिप, "भारत की पूर्व की ओर देखो नीति: इसका विकास और दृष्टिकोण," दक्षिण एशियाई सर्वेक्षण , वॉल्यूम। 18, नंबर 2 (सितंबर 2011), पीपी 239-257 ।
3. ^ ए बी झा, पंकज (23 मार्च 2019)। "भारत की एक्ट-ईस्ट नीति में वियतनाम की प्रमुखता" । ओपेड कॉलम सिंडिकेशन ।
4. ^ ए बी सी डी "एशिया टाइम्स: म्यांमार भारत को दक्षिण पूर्व एशिया का रास्ता दिखाता है" । 22 मई 2001। 22 मई 2001 को मूल से संग्रहीत ।
5. ^ ए बी सी डी ई "भारत की 'पूर्व की ओर देखो' नीति लाभदायक रही" । Archive.globalpolicy.org .
6. ^ ए बी सी डी ई एफ "एशिया टाइम्स ऑनलाइन :: दक्षिण एशिया समाचार - भारत ने पूर्वी एशिया को फिर से खोजा" । 17 मई 2008। मूल से 17 मई 2008 को संग्रहीत ।
7. ^ ए बी सी डी ई एफ "एशिया टाइम्स ऑनलाइन :: भारत और पाकिस्तान से दक्षिण एशिया समाचार, व्यापार और अर्थव्यवस्था" । 8 जुलाई 2008। मूल से 8 जुलाई 2008 को संग्रहीत ।
8. ^ ए बी "एशिया टाइम्स ऑनलाइन :: भारत और पाकिस्तान से दक्षिण एशिया समाचार, व्यापार और अर्थव्यवस्था" । 5 सितंबर 2008। मूल से 5 सितंबर 2008 को संग्रहीत ।
9. ^ चीन-भारत संबंध
10. ^ http://countrystudies.us/india/126.htm भारत-नेपाल संधि
11. ^ ए बी चीन-म्यांमार संबंध: विश्लेषण और संभावनाएं लिक्सिन गेंग द्वारा, द कल्चर मंडला , वॉल्यूम। 7, नहीं. 2, दिसंबर 2006
12. ^ शंबॉघ, डेविड (2006)। पावर शिफ्ट: चीन और एशिया की नई गतिशीलता । कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस. पी। 218. आईएसबीएन 978-0-520-24570-9.
13. ^ डेविड ब्रूस्टर. "एशिया प्रशांत शक्ति के रूप में भारत। 19 अगस्त 2014 को लिया गया" ।
14. ^ ए बी "बर्मा पर भारत की चुप्पी की व्याख्या" । बीबीसी समाचार । 26 सितम्बर 2007 . 11 मई 2010 को पुनःप्राप्त .
15. ^ "भारत और चीन बर्मा के संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं" ।
16. ^ ए बी वाल्टर सी. लाडविग III, "डेल्हीज़ पैसिफिक एम्बिशन: नेवल पावर, 'लुक ईस्ट,' और एशिया-पैसिफिक में भारत की उभरती भूमिका," एशियाई सुरक्षा , वॉल्यूम। 5, नंबर 2 (जून 2009), पीपी 98-101
17. ^ "भारत-चीन व्यापार लिंक फिर से खुलेगा" , बीबीसी समाचार, 19 जून 2006। 31 जनवरी 2007 को पुनःप्राप्त।
18. ^ "भारत-चीन संबंध: दस-आयामी रणनीति" । www.rediff.com ।
19. ^ "भारत, चीन 2010 तक व्यापार लक्ष्य पूरा करेंगे" ।
20. ^ "भारत और चीन के बीच सीमा पर विवाद" । 14 नवंबर 2006 - news.bbc.co.uk के माध्यम से।
21. ^ "चीन में, प्रणब संबंधों में तनाव को दूर करने के लिए" । मूल से 29 सितम्बर 2008 को संग्रहीत ।
22. ^ होंगमेई, ली (27 अक्टूबर 2010)। "भारत की "पूर्व की ओर देखो नीति" का अर्थ है "चीन को घेरने की तलाश"?" . पीपुल्स डेली । 1 नवंबर 2010 को पुनःप्राप्त .

23. ^ बिंग, दाई (22 अक्टूबर 2010)। "भारत और चीन का शानदार खेल जोरों पर"। चीन इंटरनेट सूचना केंद्र। 1 नवंबर 2010 को पुनःप्राप्त .
24. ^ लस्कर, रेजौल (दिसंबर 2013)। "कूटनीति के माध्यम से राष्ट्रीय हित को बढ़ावा देना"। असाधारण और पूर्णाधिकारी कूटनीतिज्ञ। 1 (9): 59-60.
25. ^ सुषमा स्वराज का कहना है, "मोदी सरकार भारत की पूर्व की ओर देखो नीति को और अधिक बढ़ावा देगी - फ़र्स्टबिज़" । 10 सितंबर 2014. 10 सितंबर 2014 को मूल से संग्रहीत। 7 मई 2020 को पुनःप्राप्त .
26. ^ "सुषमा स्वराज ने भारतीय दूतों से कहा कि वे पूर्व की ओर काम करें, न कि केवल पूर्व की ओर देखें"। द इकोनॉमिक टाइम्स। 26 अगस्त 2014। आईएसएसएन 0013-0389 । 7 मई 2020 को पुनःप्राप्त .
27. ^ नायडू, जीवीसी (2006)। "भारत और एशिया-प्रशांत: पूर्व की ओर देखो नीति"। इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल . 1 (1): 89-103. आईएसएसएन 0973-3248 . जेएसटीओआर 45340547 ।
28. ^ [ए] [बी] हॉल, इयान; गांगुली, सुमित (1 फरवरी 2020)। "परिचय: नरेंद्र मोदी और भारत की विदेश नीति"। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति . 59 (1): 1-8. डीओआई : 10.1057/एस41311-021-00363-8 । आईएसएसएन 1740-3898 . पीएमसी 8556799 ।
29. ^ [ए] [बी] [सी] [डी] बनर्जी, अनामित्रा (25 अप्रैल 2020)। "भारत की लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट नीतियों की तुलना - जेके पॉलिसी इंस्टीट्यूट | अनुसंधान, नीति, विकास, शासन"। 7 मई 2020 को पुनःप्राप्त .
30. ^ [ए] [बी] झा, प्रेम शंकर (मई 2017)। "मोदी के तहत चीन-भारत संबंध: आग से खेलना"। चीन रिपोर्ट . 53 (2): 158-171. डीओआई : 10.1177/0009445517696630 । आईएसएसएन 0009-4455 . एस2सीआईडी 157801747